23 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा सुहागिन और सदा संपन्न आत्मा की अनुभूति

➢➢ अमृतवेला सदा सुहागवती भाग्यवान आत्मा की स्मृति

➳ _ ➳ अमरनाथ शिव की मैं आत्मा सच्ची सुहागिन पार्वती हूं

→ मेरा सुहाग अविनाशी है

→ सदा अपने शिव पिया के साथ रहने वाली मैं संतुष्ट आत्मा हूं

→ मेरे शिव साजन ने मुझ आत्मा का श्रृंगार किया है

■ शिव पिया ने अविनाशी आत्म स्मृति का तिलक और मर्यादाओं के कंगन मुझे पहनाए हैं

■ सदा दिव्य गुणों से सजी सजाई मैं आत्मा श्रेष्ठ और शुभ कार्य के निमित्त हूं

■ मैं सर्व खजानों से संपन्न हूं

■ सदा सुहाग वती मैं स्वयं को हर्षित अनुभव कर रही हूं

➳ _ ➳ इसी संपन्न सुख स्वरूप स्थिति में मैं आत्मा उड़ चली परमधाम अपने शिव साजन के पास

→ अपनी किरणो रूपी बाहें फैलाए शिव पिया मुझ चैतन्य आत्मा का स्वागत करते हैं

→ अपने शिव युगल के साथ मैं आत्मा परमधाम में मिलन मना रही हूं

→ एक- एक सतरंगी किरण मुझ आत्मा को सर्व खजानों से संपन्न बना रही हैं

■ आत्मा और परमात्मा के कंबाइंड रूप का अनुभव कर रही हूं

■ अनेकों जन्म वियोग के बाद इस संगम युग पर आज यह सुहावनी घड़ी आई है

■ मैं पवित्र आत्मा इस सुंदर मिलन मेले का अनुभव कर रही हूं

■ मुझ आत्मा रूपी पार्वती के गले में अमरनाथ शिव की महिमा की माला पड़ी हुई है

■ उसकी महिमा का एक-एक मनका मैं आत्मा फेरती अर्थात याद करती सदा हर्षित हूं

➢➢ मैं आत्मा परमधाम से नीचे इस संगमयुगी सृष्टि पर अपने साकारी देह में प्रवेश करती हूं

➳ _ ➳ अपने भाग्य को स्मृति में लाती हूं

→ मन की खुशी से यह पुराना तन भी निरोगी हो गया है

→ सर्व खुशियां मेरी झोली में है

→ इस रूहानी ज्ञान धन को पाकर मैं श्रेष्ठ धनवान बन गई हूं

→ यह अविनाशी ज्ञान धन स्थूल धन को भी खींच कर मुझ आत्मा को भरपूर कर रहा है

→ इस संगम युग पर सर्व संबंध निभाने वाला परमात्मा मेरा हो गया है

■ वह सदा मुझ से प्रीत की रीत निभाता है

■ सदा हर संबंध निभाता है

■ इस संगम युग पर उसने मुझ आत्मा को श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार का संग दे होली हंस बना दिया है

■ मुझ आत्मा का सदा सुहाग का तिलक और भाग्य का सितारा चमक रहा है

■ सदाशिव पिया की कंपनी में रहने वाली मैं सदा सुहागन भाग्यवान आत्मा हूं

■ इसी संपन्न स्थिति का अनुभव करती मैं आत्मा अब अपनी दिनचर्या प्रारंभ करती हूं